यज्ञ–पात्र

सचित्र विवरणिका

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
An Institution of National Importance Established by an Act of Parliament

डॉ. ज्ञानेन्द्र नारायण राय
सेण्टेनरी विजिटिंग फेलो

प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी
समन्वयक

भारत अध्ययन केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी–221005

यज्ञ–पात्र सचित्र विवरणिका

डॉ. ज्ञानेन्द्र नारायण राय
सेण्टेनरी विजिटिंग फेलो
भारत अध्ययन केन्द्र

प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी
समन्वयक
भारत अध्ययन केन्द्र

प्रथम आवृत्ति : अगस्त 2025

मूल्यः 100.00

प्रकाशकः
भारत अध्ययन केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी–221005
ईमेल–**bharat.ak@bhu.ac.in**

यज्ञ–पात्र

श्रौत–यज्ञों में प्रयुक्त होने वाले यज्ञपात्र

यज्ञ के प्रमुख रूप से दो विभाग हैं –'श्रौत' एवं 'स्मार्त'। श्रुति वेद का ही दूसरा नाम है। तदनुसार श्रुति–प्रतिपादित यज्ञों को 'श्रौतयज्ञ' एवं गृह्यसूत्रों तथा स्मृतियों में प्रतिपादित यज्ञों को 'स्मार्तयज्ञ' कहते हैं। श्रौतयज्ञ का विस्तृत विवरण हमें श्रौतसूत्रों के द्वारा प्राप्त होता है। यहाँ श्रौतयज्ञों में प्रयुक्त होने वाले यज्ञपात्रों को प्रस्तुत किया गया है।

यज्ञपात्रों के परिचय

Showcase (शोकेश)-I

1.1 यूप– यज्ञीय स्तम्भ, जिसमें वध्य–पशु बाँधा जाता है (ऋग्वेद 5.2.7) यह पलाश, खदिर, बिल्व अथवा रौहितक के काष्ठों में किससे निर्मित हो यह यजमान की फलकामना पर निर्भर करता है, आपस्तम्भ श्रौतसूत्र 7.1.16 के अनुसार यूप का आकार यज्ञ के प्रकार के आधार पर एक से तैंतीस अरत्नियों तक हो सकता है, सामान्यतः पशु–याग के लिए 3 से 4 अरत्नि, भारद्वाज श्रौतसूत्र 7.2.7, सोमयाग के लिए 5 से 15, कात्यायन श्रौतसूत्र 6.1.31 के अनुसार आपस्तम्भ श्रौत्रसूत्र के अनुसार इतना ऊँचा कि जितना हाथ को उठाकर अथवा न उठाकर खड़े अथवा रथ पर खड़े यजमान की ऊँचाई हो। यह अष्टकोणीय अग्र भाग में शुण्डाकार होता है और नीचे बिना रंदा हुआ 1/5 भाग को जिसे 'ऊपर' कहते हैं, गड्ढे के भीतर डाल देते हैं।

2. चमसपात्र– ये यज्ञपात्र विकंकत काष्ठ के बने होते हैं। इनका आकार और मान 'प्रणीता' सदृश है। इनमें सोमरस रखकर आहुति दी जाती है। ये संख्या में दस होते हैं। प्रत्येक को एक दूसरे से अलग जानने के लिए इसके दण्ड में अलग–अलग चिह्न

अथवा अलग–अलग आकार बने होते हैं।

विकंकतमयाः श्लक्ष्णास्त्वग्विलाश्चमसाः स्मृताः।
चतुरंगुलखाताश्च तेषां दण्डेषु लक्षणम्।।
होतुर्मण्डल एव स्याद् ब्रह्मश्चतुरस्रकः।
उद्गातृणां च त्र्यस्त्रिः स्याद्याजमानः पृथुः स्मृतः।।
प्रशास्तुरवतष्टः स्यादुत्तष्टो ब्रह्मशंसिनः।
पोतुरग्रे विशाखी स्यान्नेष्टुः स्याद्विगृहीतकः।।
अच्छावाकस्य रास्ना च आग्नीध्रस्य मयूषकः।।
सव्यवकः सदस्यस्य एतच्चमसलक्षणम्।।
दण्डानामेष आकारः चमसाश्चतुरस्रगाः।–*देवयाज्ञिकपद्धति*

2.1 मण्डलहोतृचमस– होता नामक ऋत्विज् जो चमस प्रयोग करता है, उसे होतृचमस कहते हैं। पहचान के लिए इसके दण्ड पर मण्डलाकार चिह्न होता है।

2.2 ब्रह्मचमस– 'ब्रह्मा' नामक ऋत्विज् के लिए जिस चमस का प्रयोग होता है, उसे ब्रह्मचमस कहते हैं। पहचान के लिए इसके दण्ड का

आकार चतुरस्र होता है।

2.3 **उद्गातृचमस–** 'उद्गाता' ऋत्विज् को सोमरस प्राप्त करने के लिए जो चमस होता है, उसे उद्गातृ चमस कहते हैं। इस चमस के दण्ड का अग्रभाग त्रिकोणाकार होता है।

2.4 **यजमानचमस–** यज्ञ में यजमान के लिए जो चमस होता है, उसे यजमान चमस कहते हैं। इसका दण्ड चतुरस्र होता है लेकिन ब्रह्मचमस से इसका दण्ड कुछ बड़ा होता है।

2.5 **प्रशास्तृचमस–** 'प्रशास्ता' नामक ऋत्विज् के लिए जो चमस प्रयुक्त होता है, उसे प्रशास्तृचमस कहते हैं। इसका दण्ड आगे की ओर झुका रहता है, जैसा कि प्रदर्शनी में देखा जा सकता है।

2.6 **ब्राह्मणाच्छंसिन् चमस–** 'ब्राह्मणाच्छंसि' नामक 'ऋत्विज्' का चमस है। इसका दण्ड आगे की ओर किंचित् ऊपर की ओर उठा होता है। यद्यपि शाखा भेद से इसमें परिवर्तन भी प्राप्त होता है, अर्थात् नीचे की ओर भी झुकाव लिये हो सकता है।

2.7 **पोतृचमस–** यह 'पोता' नामक ऋत्विक् के द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाला चमस है। इसके दण्ड का अग्र भाग द्विमुखी होता है।

2.8 **नेष्टृचमस–** इस चमस का प्रयोग 'नेष्टा' नामक ऋत्विज् करता है। इसके दण्ड का अग्रभाग दाहिनी ओर मुड़ा होता है।

2.9 **अच्छावाक् चमस–** यह अच्छावाक् नामक ऋत्विक् का चमस पात्र है। इसके दण्ड में रस्सी लपेटने के लिए वृत्ताकार घात कटा होता है।

2.10 **आग्नीध्रचमस–**यह पात्र 'आग्नीध्र' नामक ऋत्विज् के द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। इसका दण्ड अग्रभाग पर नुकीली त्रिकोणाकृति का बना होता है।

2.11 **प्राशित्रहरण–** यह यज्ञपात्र खादिरकाष्ठ का बना हुआ यज्ञपात्र है। वेद की शाखा परम्परा के भेद से यह कई प्रकार का होता हैं, जैसे– गाय के कान के आकार का, चमस के आकार का, दर्पण के आकार का। *आपस्तम्बश्रौत्रसूत्र* के टीकाकार धूर्तस्वामिन् ने कहा है कि– **प्रासित्रहरणं गोकर्णाकृति चमसाकृति वा विखनसो मतात्**। इस पर

प्राशित्रसंज्ञक हवि को रखकर ब्रह्मा को दिया जाता है। *देवयाज्ञिक पद्धति* में कहा गया है कि– **प्राशित्रहरणं वृत्तमादर्शाकारं, चतुरस्रं चमसाकारं वा**। इसकी लम्बाई पाँच अंगुल और चौड़ाई चार अंगुल होती है। पीछे की ओर दो अंगुल का दण्ड होता है। ये दो होते हैं। एक पर पुरोडाश रखा जाता है और दूसरा दण्ड ऊपर से ढँका जाता है।

3. करम्भपात्री– यज्ञ के निमित्त दक्षणाग्नि में पक्व सत्तु तथा दधि रखने के छोटे–छोटे गोला युक्त पात्र। अर्थपरिमाणदीर्घा एका करम्भपात्री च, 5.4

4. अधिषवण फलक– वरण काष्ठ से निर्मित एक हाथ लम्बा, बारह अंगुल

चौड़ा, फलक सोमलता कुटने के निमित्त प्रयोग में आता है।

Showcase (शोकेश)-II

1. **उत्तरारणि–** यह यज्ञपात्र शमीगर्भ अश्वत्थ वृक्ष के काष्ठ से अग्नि को प्राप्त करने के निमित्त बनाई जाती है। इसी काष्ठ में से एक आठ अंगुल लम्बा टुकड़ा कील के आकार जैसा काटकर मन्थ बनाया जाता है। *गृह्यसंग्रह* में इसका विवरण इस प्रकार है–

आश्वत्थीन्तु शमीगर्भामरणीं कुर्वीत सोत्तराम्।
उरोदीर्घां रत्निदीर्घां चतुर्विंशाङ्गुलां तथा।।
चतुरङ्गुलोच्छ्रितां कुर्यात् पृथुत्वेन षडंगुलाम्।
अष्टाङ्गुलः प्रमन्थः स्याच्चात्रं स्याद्द्वादशाङ्गुलम्।।
ओविली द्वादशैव स्यादेतन्मन्थनयन्त्रकम्।
मूलादष्टाङ्गुलमुत्सृज्य त्रीणि त्रीणि च पार्श्वयोः।।
मूलादष्टाङ्गुलं त्यक्त्वा अग्रात्तु द्वादशाङ्गुलम्।
देवयोनिः स विज्ञेयस्तत्र मध्यो हुताशनः।। इति

– (*गृह्यसंग्रह–* 1/78–81)

2. **अधरारणि–** जिस काष्ठ पर मन्थ रखकर अग्निमन्थन किया जाता है, उसे अधरारणि कहते हैं। अधरारणि चौबीस अंगुल लम्बी, छः अंगुल चौड़ी और चार अंगुल ऊँची बनाई जाती है।

3. **ओविली–** अग्निमन्थन करते समय प्रमन्थ या मन्थ को जिस काष्ठ से दबाते हैं, उसे ओविली कहते हैं। यह बारह अंगुल लम्बी होती है। **ओविली द्वादशांगुल्या।** *यज्ञपार्श्व परिशिष्ट*, श्लोक 4.1

4. **प्रमन्थ–** यह यज्ञपात्र कील जैसा आठ अंगुल लम्बा उत्तरारणि के काष्ठ से ही टुकड़ा निकालकर बनाया जाता है। इसके नुकीले भाग को अधरारणि पर रखकर, ऊपर से ओविली से दबाकर, मध्य में पहले से लपेटी हुई रस्सी अर्थात् रज्जु को दोनों हाथों से खींचकर अग्निमन्थन किया

जाता है। अग्नि का मन्थन किये जाने के कारण ही इसका नाम प्रमन्थ या मन्थ पड़ा है। **एकशलाकया मन्थः**। *कात्यायन–श्रौतसूत्र–* 5.8.18

5. **रज्जु–** अग्निमन्थन के लिए चात्र में लपेटे जाने वाली डोरी रज्जु (नेत्र) है। यह चार हाथ लम्बी डोरी होती है। इसे **'नेत्र'** भी कहा गया है। **नेत्रं स्याद् व्याममात्रकम्**। (*यज्ञपार्श्व परिशिष्ट–* श्लोक 4.1)

6. **शम्या–इष्टियज्ञेषु प्रकृतिभूते हविर्यज्ञानां तृतीये दर्शपूर्णमासप्रकरणे तद्विकृतिषु च प्रयोक्तव्या खादिरकाष्ठनिर्मिता षट्त्रिंशदंगुलपरिमितायामा अग्रभागे अष्टास्वंगुलिषुकुम्बाष्टकयुता तण्डुलादिपेषणकाले दृषदोऽधस्तात् स्थापनायोपयुज्यमाना अग्नीध्रकर्तृकदृषदुपलादिसमाहननादौकरणभूता शम्यापात्रं भवति।** (*श्रौतयज्ञप्रक्रियापदार्थानुक्रमकोष* पृ.–986)। शम्या खदिर काष्ठ से बनाई जाती है जो गदा के आकार की 32 अंगुल या छत्तीस अंगुल लम्बी होती है। शम्या के मोटे वाले भाग को 'कुम्ब' कहते हैं। शम्या का प्रयोग यज्ञशाला के मापन के लिए भी किया जाता है। शुक्ल यजुर्वेद की परम्परा में जिस प्रकार की शम्या का प्रयोग यज्ञपात्र के रूप में किया जाता है उसका प्रदर्शन यहाँ किया गया है। इसमें बीच में रिक्त स्थान होता है जिसे प्रदर्शित की हुई शम्या में देखा जा सकता है। नाली आकार वाली शम्या के रूप में इसका वर्णन है। (*कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 5.3.19 एवं 22 में इसका सन्दर्भ है)।

7. **परीशास–** महावीर पात्र को अग्नि पर से पकड़कर उठाने के लिए यह एक यज्ञकाष्ठ का सन्दंश है। ''परीशासावादत्ते। *कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 26.5.12

8. **निरांछन–** यह एक प्रकार का मापक यन्त्र है।

Showcase (शोकेश)-III

1. **उलूखल मुसल–** हविर्द्रव्य को कूटने में प्रयुक्त होने वाला यह यज्ञपात्र मुख्यतः पलाश के काष्ठ का बना होता है। यह बारह अंगुल ऊँचा और मध्य में कृश (पतला) होता है। *कात्यायन–श्रौत–सूत्र* के अनुसार इसे चिति के पास उत्तर कोने में ऊँचाई पर रखते हैं– **खादिरं मुसलं कार्यं पालाशः–स्यादुलूखलः** (*देवयाज्ञिकपद्धति*– पृष्ठ 6)

एक अन्य विवरण के अनुसार– **मुस्यति खण्डयतीति मुसलम्**। यह यज्ञपात्र खदिर काष्ठ का बनता है। यह बारह अंगुल लम्बा और गोल आकार का होता है। यव, व्रीहि आदि हविर्द्रव्य का खण्डन इसी से होता है। **खादिरं मुसलं कार्यम्। मुसलोलूखलेवार्क्षे स्वायते सुदृढे तथा इच्छाप्रमाणे भवतः**।। (*देवयाज्ञिकपद्धति*– पृष्ठ 6)

2. **ग्रहपात्र–** ये पात्र दर्शपूर्णमास याग में प्रयुक्त उलूखल के आकार के होते हैं। एक से अधिक होने के कारण अलग–अलग चिह्न बने होते हैं। सोमयाग के अवसर पर विभिन्न देवताओं के लिए इसमें सोमरस प्रदान अथवा समर्पित करते हैं। यह ग्रह कई प्रकार के होते हैं इनके

मध्य में छल्ला बना हुआ होता है। इनके निर्माण के लिए विकंकत काष्ठ को उपयुक्त माना गया है।

ग्रहचमसद्रोणकलशादीनि।'' *देवयाज्ञिकपद्धति* पृष्ठ 7

3. **स्फ्य–** यह यज्ञपात्र खदिर काष्ठ से बनाया जाता है। यह एक हाथ लम्बा, दोनों ओर धारवाला तथा आगे से नुकीला होता है। यज्ञ के समय आग्नीध्र नामक ऋत्विज इसे अपने हाथ में लिए रहता है। 'स्फ्य' का दूसरा आकार 'असि' अर्थात् तलवार की तरह होता है– **स्फ्यो नाम बाहुमात्रः खड्गाकारः काष्ठविशेषः** (तैत्तिरीय संहिता 1.6.8 पर सायण भाष्य)। दूसरे रूप में, 'स्फ्य' को ही वज्र कहा गया है। 'स्फ्य' का प्रयोग यज्ञवेदी की माप नापने और माप चिह्नित करने के लिए भी किया जाता है– **स्फेन वेदिं परिगृह्णति।** शाखा परम्परा के अनुसार भी खदिर वृक्ष की लकड़ी से बना स्फ्य खड्गाकृति तथा एक प्रादेश लम्बा होता है। **स्फ्यश्च खादिरः खड्गाकृतिः अरत्निमात्रः**

(*कात्यायन–श्रौत–सूत्र* पर देवयाज्ञिक की टीका – 1.3.33)

4. **मयूख–** दुहने के निमित्त अजा को बाँधने के लिए प्रयुक्त काष्ठ की खूंटी को मयूख कहते हैं। यह संख्या में तीन होती है। गो बाँधने के निमित्त भी–

गोबन्धनार्थाः स्थूणा मयूखम्। *कात्यायन श्रौतसूत्र* 26.02.15

5. **स्रुव–स्रवति आज्यं यस्मात्–** जिस पात्र से अग्नि पर आज्य (घी) की आहुति दी जाती है, उसे स्रुव कहते हैं। यह खदिर (खैर) की लकड़ी का अरत्निमात्र एक हाथ लम्बा या 24 अंगुल आकार का बनता है। **अरत्निमात्रः स्रुवः अंगुष्ठपर्ववृत्तपुष्करः।** (*कात्यायन– श्रौत–सूत्र* 1.3.39)– इसमें आज्य लेने के लिए आगे की ओर अंगुष्ठपर्वमात्र का गर्त होता है

जिसे प्रदर्शनी में देखा जा सकता है।

6. **दर्वी–** यह विकंकत काष्ठ की बनी कलछुल की तरह एक बाहु लम्बी होती है जिसके अग्रभाग पर कलछुल की तरह का आकार होता है। दर्वी से आहवनीय अग्नि में होम किया जाता है। दर्वी का प्रयोग विवाह संस्कार में भी आहुति प्रदान करने के लिए भी किया जाता है। चातुर्मास्ययाग एवं गोपितृयाग में इसी से हविर्द्रव्य की आहुति दी जाती है। ''............... स्थाल्या दर्व्यादत्ते ....'' *कात्यायन श्रौतसूत्र* 5.6.30

7. अभ्रि– उदुम्बर, बाँस, खदिर, विकंकत, पलाश, शमी अथवा किसी भी यज्ञीय काष्ठ से अभ्रि बनाई जा सकती है। इसका कोई विशिष्ट माप नहीं होता। यह एक प्रादेश, एक बाहु अथवा एक व्याम के बराबर हो सकती है– **खादिरीं वैष्णवीं वा कल्माषीं सुषिराम् असुषिरां वा उभयतःक्ष्णूताम् अन्यतरतःक्ष्णूतां वा पालाशीमौदुम्बरीम् अर्कमयीं शमीमयीं वा। यो वा कश्चन वृक्षः फलग्रहिः तस्य मुष्टिमात्रीं प्रादेशमात्रीम् अरत्निमात्रीं बाहुमात्रीं व्याममात्रीम् अपरिमितां वा।** (*शांखायन–श्रौत–सूत्र* 11.1.11)

8. मेक्षण– मेक्षणशब्देन प्रादेशमात्रा समिदुच्यते– (*तैत्तिरीयब्राह्मण* पर सायणभाष्य 1.3.10)

प्रादेशमात्रं विज्ञेयं मेक्षणं तु विकंकतम्–

– (*पारस्कर गृह्यसूत्र* पर गदाधर की टीका 1.2)

'मेक्षण' काष्ठ का बना एक हाथ लम्बा अग्नि को प्रज्वलित करने के लिये प्रयोग में लाया जाने वाला पात्र है, जो पलाश, विकंकत या वारण की काष्ठ से बनाया जाता है।

9. **उपस्थम्भन** – यह शकट (बैलगाड़ी) के जुआ को सहारा देने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

10. **शम्या**– यह यज्ञ विधान में प्रयुक्त होने वाला विशिष्ट पात्र है।

Showcase (शोकेश)-IV

1. **उदंचन**–'उदंचन' पात्रविकंकत काष्ठ से बना स्रुव की तरह का होता है। इसमें कटोरा बना होता है, लेकिन दण्ड नहीं होता। द्रोणकलश से सोम प्राप्त करने के लिए इसका उपयोग होता है।

परिप्लावां यथा स्रुक अदण्डा एवम्– (*आपस्तम्ब–श्रौत–सूत्र* 12.2.7)

परिप्लावां स्रुक्पुष्कराम्– (*कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 9.2.15)

द्रोणकलशात् अधाराग्रहाः परिप्लवया गृह्यते–

– (*आपस्तम्ब–श्रौत–सूत्र 12.18.11*)

2. प्रोक्षणी–

3. **उभयतोमुख ऋतुग्रह पात्र–** पीपल काष्ठ से निर्मित प्रोक्षणी पात्र के सदृश दोनों तरफ हंसमुखी नालिकायुक्त सोमरस ग्रहण करने का पात्र।

"**ऋतुपात्रेपूर्वे –** *कात्यायन श्रौतसूत्र* 9.2.13 इत्यत्र वर्णन सूत्रितम्।

4. **प्राशित्रहरणी –**

5. **दृषत्–** दीर्यते असौ दृषत्। पुरोडाश बनाने के लिए यव या व्रीहि का पेषण संस्कार इस पर होता है। यह एक शिला है। यह एक रत्नि लम्बी और चौड़ी चतुरस्र होती है। दृषद्रत्निप्रमाणेन। यज्ञपार्श्व परि.– श्लोक 24

6. **उपल–** पुरोडाश बनाने के लिए यव या व्रीहि को पीसने की लोढ़िया को उपल कहते हैं। ''तथोपला0। यज्ञपार्श्व परि.– श्लोक 124

7. **प्राशित्रहरण–** यह यज्ञपात्र खादिरकाष्ठ का बना हुआ यज्ञपात्र है। वेद की शाखापरम्परा के भेद से यह कई प्रकार का होता हैं, जैसे– गाय के कान के आकार का, चमस के आकार का, दर्पण के आकार का। *आपस्तम्ब–श्रौत्र–सूत्र* के टीकाकार धूर्तस्वामिन् ने कहा है कि– **प्रासित्रहरणं गोकर्णाकृति चमसाकृति वा विखनसो मतात्**। इस पर प्राशित्रसंज्ञक हवि को रखकर ब्रह्मा को दिया जाता है। *देवयाज्ञिक पद्धति* में कहा गया है कि– **प्राशित्रहरणं वृत्तमादर्शाकारं, चतुरस्रं चमसाकारं वा**। इसकी लम्बाई पाँच अंगुल और चौड़ाई चार अंगुल होती है। पीछे की ओर दो अंगुल का दण्ड होता है। ये दो होते हैं। एक पर पुरोडाश रखा जाता है और दूसरा दण्ड ऊपर से ढँका जाता है। प्राशित्रहरण कुर्यात् पञ्चाङ्गुल प्रमाणकम्। आदर्शाकारवन्मध्ये *यज्ञपार्श्वपरिशिष्ट*– श्लोक 122

8. **षडवत्त–षडवत्तचोभयत्र खातवत्–** षडवत्त पात्र काष्ठ की एक प्रकार की प्लेट है, जिसमें दो गोलाकार खात होते हैं जिसमें आग्नीध्र को 'षडवत्त' भाग दिया जाता है। वह भाग जिस पात्र पर रखा जाता है, उसे भी षडवत्त कहते हैं।उपर्युक्त पात्र पर दोनों गोलाकार गहराई लिये स्थान पर सर्वप्रथम आज्य फैलाया जाता है तत्पश्चात् पुरोडाश के दो भाग आज्य के ऊपर रखकर और पुनः उसके ऊपर दोनों स्थानों पर आज्य रखने के कारण इस पात्र का नाम 'षडवत्त' है। **द्यावापृथिव्योरुपह्वानेऽग्नीध्रे षडवत्तम्–** *कात्यायन–श्रौत–सूत्र*

9. **पुरोडाशपात्री–** यह एक वारणकाष्ठ का प्रादेशमात्र चतुरस्र पात्र है। देवयाज्ञिक के अनुसार यह एक प्रादेश प्रमाण का चतुरस्र काष्ठ निर्मित पात्र है। इसके मध्य में 6 अंगुल वृत्त की गहराई का भाग बना होता है। इसके नाम से स्पष्ट है कि इसमें पकाने के बाद पुरोडाश रखते हैं। *देवयाज्ञिकपद्धति,* पृष्ठ–7 में कहा गया है कि **पुरोडाशपात्री– प्रादेशमात्री समचतुरस्रषडंगुलवृत्तखातवती।**

पुरोडाशाख्यपात्री च प्रादेशाश्चतुरस्रिका।
मध्ये तु दर्पणाकारा मूले दण्डसमन्विता।।

– (*यज्ञपार्श्वपरिशिष्ट*– श्लोक 119–120)

10. **इडापात्री–** यह यज्ञपात्र वारण काष्ठ से निर्मित होता है। *बौधायन–श्रौत–सूत्र* में इसे काँसे से भी निर्मित किये जाने का निर्देश है।यक एक अरत्नि लम्बी, छः अंगुल चौड़ी, बीच में गहरी और कृशमध्या होती है तथा इसमें 4 अंगुल का एक हैंडिल होता है। 'पात्री' एक सामान्य शब्द है जो इडापात्री, पुरोडासपात्री तथा पृष्ठपात्री के लिए प्रयुक्त होता है। **पात्री शब्देनअविशेषात् पुरोडासपात्रयोः इडापात्र्याश्च ग्रहणम्।** *कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 2.7.42 पर सरला टीका। अध्वर्यु, पुरोडाश और चरु प्रभृति की आहुति के अनन्तर शेष हविर्द्रव्य (पुरोडाश) को ऋत्विज् पात्री रखकर होता को देता है। जिसे इडोपह्वान के बाद ऋत्विज् सहित यजमान भक्षण करते हैं।

11. प्रणीता– प्रणीता पात्र में पवित्र जल रखते हैं जो 8 अंगुल लम्बा और 8 अंगुल चौड़ा चतुरस्र होता है और इसमें 6 अंगुल का, 3 अंगुल गहराई वाला कटोरा बना रहता है। *संस्काररत्नमाला* के अनुसार यह न्यग्रोध काष्ठ का बनाया जाता है। इसमें 4 अंगुल का दण्ड होता है। यह विकंकत काष्ठ का भी बना हो सकता है एवं धातु अथवा मिट्टी से भी निर्मित प्रणीता पात्र प्रयोग किया जा सकता है। इसी के जल को लेकर पुरोडाश तैयार किया जाता है।

प्रणीता प्रणयनपात्रं चमसः। स च न्यग्रोधजो रौहीतकजो वा। चतुरंगुलदण्डश्चतुरस्र षडंगुलदीर्घस्त्र्यङ्गुलनिम्नचतुरस्रविलोऽविलोदण्डो वा। आस्मिनपक्षेपरितो द्वयङ्गुलमवशेष्य सर्वं बिलमेव।

– (*संस्काररत्नमाला,* गोपीनाथ दीक्षित, पृ. 21)

अष्टांगुलिविस्तारायता प्रणीता चतुरङ्गुलोन्नता मध्ये षडङ्गुलिविस्तारायता त्र्यङ्गुलिनिम्ना चतुरस्रा प्रस्थार्धोदकपूर्णा वृत्ता वा। *वैखानस–श्रौत–सूत्र* 11.8

12. **अन्तर्धानकटः–** यह बारहअंगुल लम्बा, छः अंगुल चौड़ा और अर्धचन्द्राकार एक यज्ञपात्र है। जिस समय अध्वर्यु गार्हपत्य के अग्नि पर पत्नीसंयाज करता है, उस समय देवपत्नियों का आवाहन होता है। लज्जा स्त्रियों का सहज धर्म है। साथ ही स्त्रियाँ पुरुष के सम्मुख भोजन करना पसन्द नहीं करतीं। सम्भवतः इसीलिए इस पात्र को बीच में रखकर उपर्युक्त कार्य का निर्वाह किया जाता है।

अन्तर्धानकटस्त्वर्धचन्द्राकारो द्वादशांगुलः। *देवयाज्ञिकपद्धति* पृष्ठ 7

13. **त्रिविलापात्री–** वारण काष्ठ से निर्मित एवक विशिष्ट प्रकार का यज्ञ पात्र है।

14. पंचविलापात्री– यह कृष्ण यजुर्वेदिय लोगों के द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला विशिष्ठ यज्ञीय पात्र है। *कात्यायन श्रौतसूत्र* 15.9.1

Showcase (शोकेश)-V

1. **कूर्च–** कूर्च कोकुश या वारण काष्ठ से बनाते हैं जो एक हाथ लम्बी मछली के आकार की होती है। अग्निहोत्र के समय इसको आवहनीय वेदी के पश्चिम में रखते हैं। स्रुवा को कूर्च के ऊपर रखते हैं।

   कौशः कूर्चो बाहुमात्रः मकराकार उच्यते। (ज्वालाप्रसाद गौड सम्पादित माध्यन्दिनसंहिता पर आधारित)।

   कूर्चो बाहुमात्रः पीठाकारः। (*कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 4.13.14)

   कूर्चं काष्ठनिर्मितम् आसनपदं स्रुचोर्निधानार्थमेतदासनं निधीयते।

   – (सरला टीका, *कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 4.13.14)

2. **द्रोण कलश–** यह विकंकत काष्ठ से निर्मित 18 अंगुल लम्बा और 12 अंगुल चौड़ा मध्य में गर्त वाला चारों ओर से परिधि युक्त पात्र है इसका प्रयोग सोमरस को छानने के लिए किया जाता है।

   "द्रोण कलश कुर्यादरत्निमात्राणि" *यज्ञपार्श्व परिशिष्ट*, श्लोक 118

3. **अग्निहोत्रहवणी–** (अग्निहोत्र हवणी का प्रयोग अग्निहोत्र में किया जाता

है) ''अग्नौ हूयते यया साऽग्निहोत्रहवणी'' विकंकत काष्ठ की बाहुमात्र लम्बी, आगे की ओर चार अंगुल गर्तवाली, हंसमुखी होती है मुख का आकार कुछ झुका हुआ अथवा सीधा भी होता है। जो शाखा परम्परा के अनुसार बनाया जाता है। इससे अग्निहोत्र किया जाता है। ''अग्निहोत्रहवणी हंसमुखी। दे.या.प.– पृष्ठ 6

'यस्य वैककंती अग्निहोत्र हवणी भवति। *तैत्तरीय आ.*10.19

वैककंती अग्निहोत्र हवणी बाहुमात्री वा अरत्नी भवति।

– *आपस्तम्भ–श्रौत–सूत्रा.*

Showcase (शोकेश)-VI

उपयमनी– यह यज्ञपात्रदेखने मेंजुहू के आकार की है लेकिन यह जुहू से बड़ी है। इस स्रुग् को उपयमनी कहते हैं। **अथ उपयमन्या महावीर आनयति** *शतपथ ब्राह्मण* 14.2.2.13। उपयमनी एक बाहु लम्बी उदुम्बर काष्ठ से निर्मित होती है। यह रौहिण स्रुक् से बड़ा होता है लेकिन इसमें कोई कटोरा नहीं होता है।

जुहू– हूयतेऽनयेति जुहूः आहुति प्रदान करने के लिए जुहू का निर्माण पलाश की समिधा से किया जाता है। इसमें भी एक कटोरे का आकार बना रहता है इसे ऊपर करके दाहिने हाथ पर रखते हैं। जब किसी अन्य स्रुवा का आहुति प्रदान करने के निमित्त निर्देश नही दिया जाता है तब जुहू के द्वारा आहुति प्रदान करते हैं। यह एक सहायक स्रुवा है। यह एक बाहु लम्बी तथा इसमें आगे की ओर चार अंगुल कटोरे की आकार की गहराई वाली हंसमुखी होती है। इसी से देवता को हविर्द्रव्य अर्पित किया जाता है। जुहू के विषय में *कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 1.8.43 पर विद्याधरजी की

टिप्पणी द्रष्टव्य है– **काष्ठनिर्मिता अग्निहोत्रहवणीसदृशी बाहुमात्री पाणिमात्री बलवती दण्डवती हंसमुखसदृशप्रसेका (प्रणालिका) हूयतेऽ इति व्युत्पत्या होमसाधानास्रुक् जुहूः।**

उपभृत्– उप समीपे भ्रियत इति उपभृत्। यह स्रुक् अश्वत्थ काष्ठ की बनती है। इसका आकार और माप जुहूवत् होता है। याग के समय अध्वर्यु इसे अपने साथ रखता है। जुहू का आज्य समाप्त होने पर शेष आहुति के लिए इसमें से जुहू में आज्य लेकर आहुति दी जाती है।इस तरह से यह एक सहायक स्रुवा है। ***आश्वत्थ्युपभृत्*** *कात्यायन–श्रौत–सूत्र*–1.3.36।

ध्रुवा– वेद्यामप्रचलिता तिष्ठतीति ध्रुवा। ध्रुवा एक विशेष आहुति प्रदान करने वाला स्रुक है। इष्टियाग में इसका प्रयोग समिष्टयजुष् आहुति प्रदान करने के लिये होता है। यह विकंकट काष्ठ की बनाई जाती है। सामान्य रूप से ध्रुवा एक जगह रखी रहती है। यह मान और आकार में जुहू सदृश यज्ञपात्र है। याग के निमित्त इसी स्रुवा से आज्य लेकर जुहू में छोड़ते हैं और याग करते हैं। **सर्वस्मै वा एतद्यज्ञाय गृह्यते यद् ध्रुवायाम् आज्यम्।** *शतपथ ब्राह्मण* 4.3.5.2।

विकंकतवृक्षसं बन्धिकाष्ठेन निर्मिता जुहूसदृशी वैककंती होमार्थं स्रुवेण गृह्यमाणस्य आज्यस्याधारभूता यागसमाप्ति पर्यन्तं वेद्यां विद्यामानतया स्थिरत्वदर्शनात् ध्रुवति अप्रचलिता भवतीति ध्रुवापदवाच्या। *श्रौत पदार्थ निर्वचनम्*, पृ.–8।

एत्य जुहाऽभिघारणं ध्रुवाया हविष उपभृतश्च। *कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 3.3.9

रौहिणहवणी– रौहिण पुरोडाश का होम जिस स्रुक् से किया जाता है, उसे रौहिणहवणी कहते हैं। स्रुवा का एक जोड़ा जो उदुम्बर काष्ठ का गर्तरहित (कटोरे का आकार नही रहता), रौहिणहवणी का प्रयोग प्रवर्ग्य इष्टि में किया जाता है। बाहुमात्र लम्बी, जुहूवत् आकार की स्रुवा होती है।

4. **इध्म–** पलाश की लकड़ी को काटकर इध्म बनायी जाती है। ये एक हाथ लम्बी होती है। प्रकृति याग में इनकी संख्या पन्द्रह एवं विकृति याग में सत्रह या इक्कीस होती है। ''**पालाशोऽष्टादश–संख्यारत्निमात्रकाष्ठकः**'', *देवयाज्ञिकपद्धति–* पृष्ठ 4

प्रायः सामान्याकाररूपा भवन्ति

एवंरूपाः दृष्टाः वहुत्र–चित्रेषु

उपवेश धृष्टि धृष्टि और उपवेश एक दूसरे के पर्याय हैं। इस यज्ञ पात्र का निर्माण पलाश या उदुम्बर वृक्ष की शाखा से करते हैं। यह विशेष रूप से पलाश वृक्ष की उस शाखा से किया जाता है जो विशेष रूप से गौ से बछड़े को हटाने के लिए किया जाता है। यह लम्बाई में एक प्रादेश के बराबर होता है। भाष्यकार आचार्य देव याज्ञिक के अनुसार यह हाथ के आकार का एक अरत्नि अथवा एक प्रादेश लम्बा होता है। इसका उपयोग अग्निहोत्र करते समय अग्नि को विलोड़ने **धृष्टिमादाय अंगारानपोहति**, *बौधायन–श्रौत–सूत्र* 1.14) या चलाने के लिए किया जता है। जब पुरोडास

पकाते है तो यह कार्य करते हैं। यह पात्र कपालोपधान से पूर्व अग्नि को हटाने में उपयोगी है। यह हाथ के पंजे के आकार की, एक हाथ लम्बी होती है जैसा कि प्रदर्शनी मे देखा जा सकता है। उपवेष इसका नामान्तर है। **स उपवेशमादत्ते धृष्टिरसीति ...तेन प्राचोङ्गारान् उदूहति**।। *कात्यायन–श्रौत–सूत्र* 2.4.25

उपवेश

धृष्टि

शास्त्रीय मापक (स्केल)– यज्ञ–पात्रों के निर्माण में पात्र निर्माता इस शास्त्रीय मापक या मापनी का प्रयोग करते हैं।

❑❑❑